ToB बालमंच

मासिक अगस्त - 2025 नन्हीं कलम से.... ✍

भारत पर्व विशेषांक

इस अंक में पढ़ें

सूरज पीला दिखता है, क्यों ?

प्रधान सम्पादक :- रूबी कुमारी
उ. म. वि. सरौनी, बौंसी (बाँका)

अंक- 42

सम्पादक :- त्रिपुरारि राय
म. वि. रौटी, महिषी (सहरसा)

प्रधान संपादक की कलम से

प्यारे बच्चों,

"ToB बालमंच" के इस भारत पर्व विशेषांक में आप सभी का हृदय से स्वागत है। अगस्त का यह महीना हमारे राष्ट्रीय जीवन में विशेष महत्व रखता है। यही वह काल है जब हमें स्वतंत्रता की स्मृतियाँ ताज़ा करने और अपने देशभक्ति भाव को संजोने का अवसर मिलता है। यह केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि हमारी एकता, विविधता और संस्कृति का जीवंत प्रतीक है। यहाँ की धरती पर असंख्य भाषाएँ, अनेक धर्म, विविध वेशभूषाएँ और भिन्न-भिन्न परंपराएँ होने के बावजूद हम सब भारतीय होने के गौरव से बंधे हुए हैं।

स्वतंत्रता दिवस जैसे भारत पर्व हमें यह याद दिलाता है कि स्वतंत्रता संग्राम के अनगिनत गुमनाम नायकों के बलिदान और संघर्ष के कारण ही हम आज स्वतंत्र हवा में साँस ले पा रहे हैं। अनेक बलिदानी व्यक्तित्वों ने अपने साहस और समर्पण से राष्ट्र को नई दिशा दी। "ToB बालमंच" सदैव बच्चों की प्रतिभा और सृजनशीलता को मंच देने का कार्य करता आया है। इस विशेषांक में भी बाल-लेखकों की कविताएँ, कहानियाँ, चित्र और लेख भारत पर्व के रंगों को और अधिक जीवंत बनाएँगे।

आइए, हम सब मिलकर संकल्प लें कि स्वतंत्रता के इन अमूल्य क्षणों को केवल उत्सव तक सीमित न रखकर, उन्हें अपने जीवन और कर्म में उतारें। यही हमारे शहीदों और स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। आप सभी को भारत पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ।

रूबी कुमारी
प्रधान संपादक, ToB बालमंच
उ. म. वि. सरौनी, बौंसी (बाँका)

सम्पादकीय

प्यारे बच्चों,

खुश रहो....

अगस्त का महीना हमारे लिए केवल वर्ष का आठवाँ महीना ही नहीं, बल्कि देशभक्ति और राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत एक प्रेरणादायी समय है। इस महीने में हम स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं और अपने महान स्वतंत्रता सेनानियों को याद करते हैं, जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर हमें स्वतंत्र भारत का अमूल्य उपहार दिया।

'ToB बालमंच' सदैव बच्चों की प्रतिभा को निखारने, उनके विचारों को दिशा देने और उनकी कल्पनाशीलता को उड़ान देने का प्रयास करता रहा है। भारत पर्व विशेषांक के माध्यम से हम यह संदेश देना चाहते हैं कि देशप्रेम केवल किताबों और भाषणों में ही नहीं, बल्कि हमारे कर्मों, हमारे संस्कारों और हमारी सोच में भी झलकना चाहिए। जब बच्चे अपनी कविताओं, चित्रों, कहानियों और लेखों में भारत के प्रति प्रेम और गर्व की भावना प्रकट करते हैं, तो वह सचमुच आने वाले उज्ज्वल भविष्य की झलक होती है।

हमारे लिए भारत पर्व केवल तिरंगा फहराने का दिन नहीं है, बल्कि यह अपने देश की संस्कृति, एकता और विविधता का उत्सव है। इस अवसर पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम शिक्षा, सेवा, सद्भाव और सृजनात्मकता के माध्यम से अपने देश को और ऊँचाइयों तक पहुँचाएँगे।

प्रिय नौनिहालों, इस विशेषांक को पढ़ते हुए आप सब अपने भीतर देशप्रेम की उस चिंगारी को प्रज्वलित करें, जो आने वाले समय में आपको जिम्मेदार और सशक्त नागरिक बनाएगी।

"वंदे मातरम्" के उद्‌घोष के साथ आइए, हम सब मिलकर भारत पर्व मनाएँ और अपने देश को नई ऊँचाइयों पर ले जाने का संकल्प करें।

तुम्हारा ही,

त्रिपुरारि राय
संपादक सह ग्राफिक्स डिजाइनर
मध्य विद्यालय रौटी, महिषी (सहरसा)

सम्पादक मंडल

प्रधान संपादक :- रूबी कुमारी, उ. म. वि. सरौनी, बौंसी (बाँका)

संपादक-सह- ग्राफिक्स डिजाइनर :- त्रिपुरारि राय, म. वि. रौटी, महिषी (सहरसा)

सह-संपादिका :- ज्योति कुमारी, म.वि. भनरा, (बाँका)

आमुख पृष्ठ सज्जा :- राजेश कुमार, फारबिसगंज कॉलेज (B.Ed विभाग), अररिया

सहयोगकर्ता :-
1. मृत्युंजयम् , म.वि.नवाबगंज, समेली, (कटिहार)
2. रंजेश कुमार, प्रा. वि. छुरछुरिया, फारबिसगंज,(अररिया)
3. केशव कुमार, प्र.शि., प्रा.वि.मोहनपुर उर्दू, मुरौल, मुजफ्फरपुर

संरक्षक :-
1. शिव कुमार, संस्थापक- टीचर्स ऑफ़ बिहार
2. ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन, ToB तकनीकी टीम लीडर

-: स्थाई स्तंभ :-

1. प्रधान सम्पादक की कलम से
2. सम्पादकीय
3. आवरण कथा
4. कविता
5. कहानी
6. हँसो रे बाबू
7. बूझो तो जानें
8. वैज्ञानिक कारण
9. कहानी बनाओ प्रतियोगिता
10. अखबारों की नजर में हम
11. उभरते सितारे
12. तकनीकी कोना
13. बालमन
14. विद्यालयी क्रियाकलाप
15. क्या आप जानते हैं ?
16. अंग्रेजी सीखें
17. ड्राइंग / पेंटिंग
18. उभरते सितारे
19. फोटो ऑफ़ द मंथ
20. हिंदी ज्ञान
21. प्रमुख दिवसें
22. प्रेरक प्रसंग
23. रोचक तथ्य
24. खेल-खेल में योग
25. तुम भी बनाओ.....
26. आपकी बात आपकी जुबानी

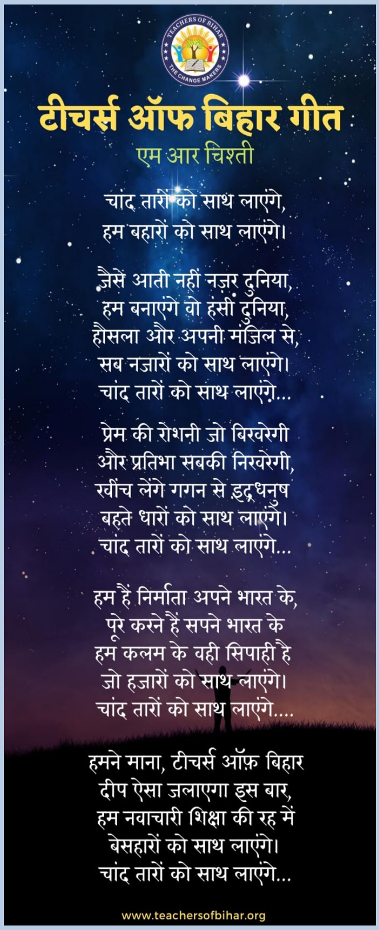

प्रेरक प्रसंग

1857 की क्रांति के समय जब अंग्रेज़ों ने झाँसी पर हमला किया, तब रानी लक्ष्मीबाई अपने छोटे पुत्र को पीठ पर बाँधकर वीरता से युद्ध में उतरीं। उनकी तलवारबाज़ी और साहस देखकर शत्रु भी दंग रह गए। उन्होंने कहा था— "मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी।" यह वाक्य केवल उनकी अटूट निष्ठा और देशप्रेम का प्रतीक नहीं था, बल्कि पूरे भारत के लिए प्रेरणा का मंत्र बन गया। स्वतंत्रता दिवस हमें याद दिलाता है कि स्वतंत्रता बलिदान और साहस से मिलती है, और हमें इसे सदैव सुरक्षित रखने के लिए संकल्पित रहना चाहिए।

पंडित राजकुमार शुक्ल की पहल पर महात्मा गांधी बिहार के चंपारण पहुँचे। वहाँ किसानों की पीड़ा देखकर उन्होंने आंदोलन छेड़ा और अन्याय का अंत किया। यह प्रसंग दिखाता है कि एक सामान्य व्यक्ति भी इतिहास बदल सकता है।

भगत सिंह ने मात्र 23 वर्ष की आयु में देश के लिए प्राणों का बलिदान दे दिया। फाँसी से पहले भी उनके चेहरे पर मुस्कान थी। यह प्रसंग बताता है कि देशप्रेम के लिए उम्र नहीं, बल्कि हिम्मत और जुनून चाहिए।

मो. सलमान राही
शिक्षक
म.वि.रौटी, महिषी (सहरसा)

शुभकामना सन्देश

"ToB बालमंच" के भारत पर्व विशेषांक के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ। यह ई-मैगज़ीन बच्चों की प्रतिभा को निखारने और उनमें सृजनशीलता व देशभक्ति की भावना जागृत करने का सराहनीय प्रयास है।

भारत पर्व के अवसर पर हमें उन विभूतियों को भी याद करना चाहिए जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में अहम भूमिका निभाई। चंपारण सत्याग्रह का इतिहास इस संदर्भ में विशेष महत्व रखता है। यह वही आंदोलन था जिसने महात्मा गांधी को देशव्यापी संघर्ष के केंद्र में ला खड़ा किया। लेकिन इस आंदोलन के पीछे एक नाम विशेष रूप से स्मरणीय है— राजकुमार शुक्ल।

राजकुमार शुक्ल ने ही गांधी जी को चंपारण आने के लिए लगातार आग्रह किया और किसानों की दुर्दशा से अवगत कराया। उनके अथक प्रयासों से गांधी जी बिहार आए और नीलहों के अन्याय के विरुद्ध चंपारण सत्याग्रह का सूत्रपात हुआ। यह आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का पहला सफल सत्याग्रह बना और आने वाले संघर्षों की नींव बना।

इस विशेषांक के माध्यम से बच्चों को न केवल भारत की सांस्कृतिक विविधता और पर्वों की जानकारी मिलेगी, बल्कि वे यह भी जान पाएँगे कि स्वतंत्रता के लिए अनगिनत गुमनाम नायकों ने कितना योगदान दिया।

ईश्वर से प्रार्थना है कि **"ToB बालमंच"** निरंतर सफलता की ऊँचाइयाँ प्राप्त करे और बच्चों को प्रेरणा देता रहे। शुभकामनाओं सहित!!

राजेश कुमार भट्ट
केन्द्रीय अध्यक्ष,
राजकुमार शुक्ल स्मृति संस्थान

ToB School Activity Link......

1. https://www.facebook.com/share/v/16NaUhcupM/
2. https://www.facebook.com/share/v/1CcXh2R2KT/
3. https://www.facebook.com/share/v/1ZbiKwxpif/
4. https://www.facebook.com/share/v/1CcHiUooMT/

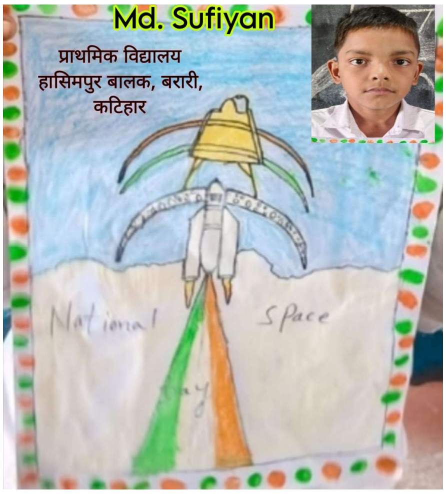

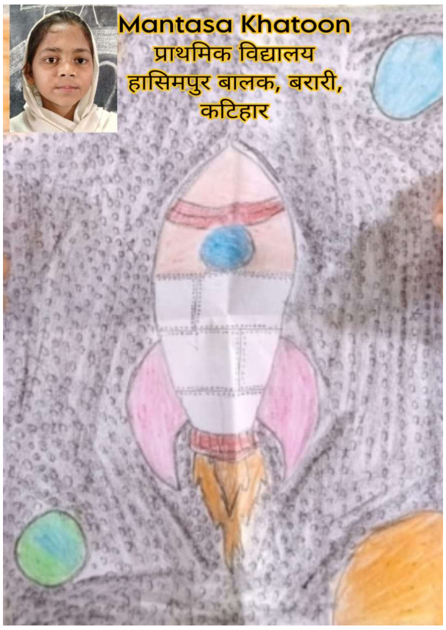

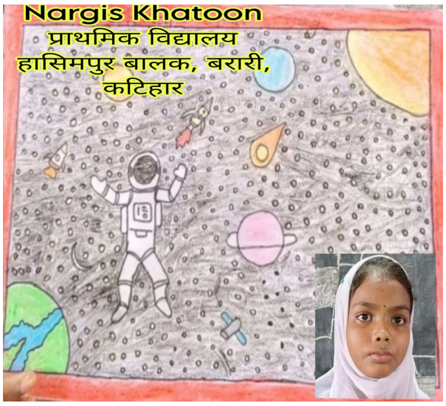

कहानी बनाओ

दिए गए चित्र को देखें और उसपर एक सुन्दर सा कहानी लिख कर हमें भेजें | उत्कृष्ट कहानी को अगले अंक में छापा जाएगा |कहानी के साथ अपना नाम, कक्षा, विद्यालय का नाम अवश्य लिखें |

बूझो तो जानें..

1. ऐसा कौन-सा कमरा है जिसमें दरवाज़ा-खिड़की नहीं होती?

2. वह क्या है जो पकड़ में भी आती है और छोड़ी भी जाती है, पर दिखती नहीं?

उत्तर: मशरूम, साँस

हंसो रे बाबू

1. टीचर – बताओ, नींद और आलस में क्या फ़र्क है?

पप्पू – नींद भगवान की देन है और आलस अपनी मेहनत का फल! ?

2. माँ – बेटा, इतने कम अंक कैसे आए?

बेटा – मम्मी, अंक तो कम आए हैं लेकिन टेंशन क्यों ले रही हो?

पास तो टीचर भी नहीं हुई, वो भी फेल हो गईं हमें पढ़ाने में!

अंग्रेजी सीखें: ADJECTIVE

POSSESSSIVE ADJECTIVE

A **possessive adjective** indicates possession or ownership. It suggests the belongingness of something to someone/something.
Some of the most used possessive adjectives are *my, his, her, our, their, your.*

All these adjectives always come before a noun. Unlike possessive pronouns, these words demand a noun after them.

Examples:
- My car is parked outside.
- His cat is very cute.
- Our job is almost done.
- Her books are interesting.

INTERROGATIVE ADJECTIVE

An **interrogative adjective** asks a question. An interrogative adjective must be followed by a noun or a pronoun. The interrogative adjectives are: *which, what, whose.* These words will not be considered as adjectives if a noun does not follow right after them. '*Whose*' also belongs to the possessive adjective type.

Examples:
- Which phone do you use?
- What game do you want to play?
- Whose car is this?

Continude....

महत्वपूर्ण दिवस

1 अगस्त – मुस्लिम महिला अधिकार दिवस (भारत) / विश्व स्तनपान सप्ताह आरंभ (1–7 अगस्त)

6 अगस्त – हिरोशिमा दिवस

7 अगस्त – राष्ट्रीय हथकरघा दिवस (भारत)

8 अगस्त – भारत छोड़ो आंदोलन दिवस

9 अगस्त – नागासाकी दिवस / विश्व आदिवासी दिवस

12 अगस्त – अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस

13 अगस्त – अंतरराष्ट्रीय बाएं हाथ दिवस

15 अगस्त – भारत का स्वतंत्रता दिवस

19 अगस्त – विश्व फोटोग्राफी दिवस / विश्व मानवतावादी दिवस

20 अगस्त – सद्भावना दिवस (राजीव गाँधी जयंती), विश्व मच्छर दिवस

23 अगस्त – चंद्रयान-3 दिवस

23 अगस्त – पंडित राजकुमार शुक्ल जयंती

29 अगस्त – राष्ट्रीय खेल दिवस (मेज़र ध्यानचंद जयंती)

राधे श्याम
वर्ग – 10th
U.M.S. तेलघी बालक
Dist.– भागलपुर

23 अगस्त

हिंदी ज्ञान: पत्र – लेखन

अपने जन्मदिन पर उपहार प्राप्त करने पर मित्र को एक पत्र लिखिए।

20/08/2025

सहरसा

प्रिय मित्र अंशु,

नमस्कार

मुझे यह पत्र लिखते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है। मेरे जन्मदिन पर तुमने जो सुन्दर उपहार भेजा, उसके लिए मैं हृदय से तुम्हारा आभार व्यक्त करता हूँ। तुम्हारा दिया हुआ तोहफ़ा मेरे लिए बहुत ही खास है क्योंकि उसमें तुम्हारी स्नेह और शुभकामनाएँ छुपी हुई हैं।

तुम्हारी इस याद ने मेरे जन्मदिन की खुशियों को और भी बढ़ा दिया। उपहार से अधिक मुझे तुम्हारे प्रेम और अपनापन ने प्रभावित किया है। सचमुच, ऐसे मित्र का साथ जीवन को अनमोल बना देता है।

एक बार फिर दिल से धन्यवाद। आशा है हम यूँ ही स्नेह और मित्रता के रिश्ते को सदैव निभाते रहेंगे।

तुम्हारा प्यारा दोस्त

सक्षम

SCHOOL ACTOVITY

आओ योग सीखें.....

अगस्त का महीना हमारे लिए बहुत खास होता है। इस महीने में हम अपना स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं और यह समय बरसात का भी होता है। बारिश के कारण हवा में नमी बढ़ जाती है, जिससे कई बार हमें आलस, सर्दी-जुकाम या पाचन की समस्या हो जाती है। ऐसे समय में अगर हम रोज़ थोड़ा-सा योग करें, तो शरीर और मन दोनों स्वस्थ रह सकते हैं।

योग से क्या लाभ मिलता है ?

1. बीमारी से बचाव – योग करने से हमारी रोगों से लड़ने की शक्ति बढ़ती है।

2. पाचन अच्छा होता है – बरसात में पेट जल्दी खराब हो जाता है, योगासन पाचन को ठीक रखते हैं।

3. मन को शांति मिलती है – प्राणायाम और ध्यान करने से मन शांत और खुश रहता है।

4. ऊर्जा और लचीलापन – रोज़ योग करने से शरीर चुस्त-दुरुस्त और मजबूत बनता है।

अगस्त में करने योग्य आसान योग :-

अनुलोम–विलोम प्राणायाम – इससे साँस की तकलीफ़ दूर होती है। वज्रासन – खाने के बाद बैठने से पाचन अच्छा होता है। भुजंगासन – इससे पीठ और कमर मजबूत होती है। ताड़ासन – शरीर सीधा और लंबा रखने में मदद करता है।

निष्कर्ष:-

जैसे अगस्त हमें आज़ादी की याद दिलाता है, वैसे ही योग भी हमें बीमारियों और तनाव से आज़ादी दिलाता है। इसलिए हम सबको रोज़ थोड़ा समय निकालकर योग करना चाहिए।

धरती, धरनी, हे धरा तेरी जय हो

धरती, धरनी, हे धरा तेरी जय हो।
धरती, धरनी, हे धरा तेरी जय हो।

कहीं नदियां, कहीं सागर पर्वतों की माला है
बड़े ही जतन से तुमने हम सब को पाला है
देखूं छवि मां की ऐसा मेरा हृदय हो,
धरती, धरनी, हे धरा तेरी जय हो।

तेरी शक्तियों को भी जान के अंजान हैं
कर्मों से मेरे तू कितनी लहू लुहान है
कर दे क्षमा मुझको न कोई प्रलय हो,
धरती, धरनी, हे धरा तेरी जय हो।

कटे पेड़ सूखी नदी कितने जीव मिट गए
मेरी ही नासमझी में विनाश मुझे दिख गए
अब मेरे कर्मों में जिंदगी की बस लय हो,
धरती, धरनी, हे धरा तेरी जय हो।

धरती धरनी हे धरा तेरी जय हो
धरती धरनी, हे धरा तेरी जय हो।

राधेश्याम, उत्क्र0 म0 वि0 तेलघी बालक

कविता: रंग-बिरंगे प्यारे फूल

रंग-बिरंगे प्यारे फूल,
लाल-लाल-पीले फूल,
कितने सुंदर लगते हैं,
इन्हें ना कोई गम है,
जब चाहे मुस्काते हैं,
सबको हर्षित बनाते हैं,
कितना कोमल इनका तन,
खींच ले पल में सबका मन,
यह दुनिया की रानी है,
जो जी चाहे करती है,
जी होता है इन फूलों को,
अंजुलि में भर घर ले आऊं,
उनकी शोभा निरख-निरख,
इन पर कविता एक बनाऊँ,

कोमल कुमारी, कक्षा- आठवीं
क्रमांक- एक
मध्य विद्यालय तरही, महिषी (सहरसा)

वैज्ञानिक कारण

सूरज पीला क्यों दिखता है?

सूरज की असली रोशनी सफेद होती है, जिसमें सातों रंग (बैंगनी से लेकर लाल तक) मिले रहते हैं। लेकिन जब यह रोशनी पृथ्वी के वायुमंडल से होकर आती है तो हवा में मौजूद धूल, जलवाष्प और गैसें छोटे तरंगदैर्ध्य (जैसे नीला और बैंगनी रंग) को बिखेर देती हैं।

इस प्रक्रिया को प्रकीर्णन (Scattering of Light) कहते हैं। दिन में जब सूरज हमारे सिर के ऊपर होता है, तब नीली और बैंगनी किरणें बिखर जाती हैं। हमारी आँखों तक ज़्यादातर पीली, नारंगी और लाल रोशनी पहुँचती है। इसलिए हमें सूरज पीला दिखाई देता है।

मुख्यमंत्री विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम : सुरक्षित शनिवार

स्कूलों में ट्रैफिक नियमों के बारे में पढ़ेंगे बच्चे, रोड सेफ्टी क्लब बनेगा

संवाददाता, पटना

अब स्कूलों में बच्चों को यातायात नियमों का भी पाठ पढ़ाया जायेगा. शहरी क्षेत्र के साथ ग्रामीण इलाके में पढ़ने वाले बच्चों को सड़क नियमों के प्रति जागरूक करने के लिए बेसिक शिक्षा दी जायेगी. जिले में संचालित सभी स्कूलों में रोड सेफ्टी क्लब का गठन करने का निर्देश दिया गया है. स्कूलों में रोड सेफ्टी क्लब गठित कर यातायात नियमों की कक्षाएं संचालित करायी जायेगी. इसमें बच्चों को सड़क दुघर्टना से बचाव और सड़क दुघर्टना से बचने के उपायों के बारे में जानकारी दी जायेगी. मास्टर ट्रेनर के माध्यम से अध्यापकों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक किया जायेगा. इसके बाद शिक्षक बच्चों को विद्यालय प्रबंधन समितियों और अभिभावकों को यातायात नियमों के बारे में जागरूक करेंगे. इसके साथ ही जिले के सभी स्कूलों की दीवारों पर भी यातायात से संबंधित नियमों को लिखवाया जायेगा. इसके साथ ही कटआउट और चित्र के जरिये भी बच्चों को यातायात नियमों से अवगत कराने के साथ ही इसका पालन करने के लिए जागरूक किया जायेगा. स्कूलों में गठित रोड सेफ्टी क्लब में प्रधानाध्यापकों को अध्यक्ष बनाया जायेगा और एक अध्यापक को सदस्य सचिव एवं विद्यालय प्रबंधन समिति का एक प्रतिनिधि, प्रत्येक कक्षा से एक छात्र को सदस्य बनाया जायेगा जो यातायात नियमों के प्रति लोगों को जागरूक करेगा. डीइओ साकेत रंजन ने बताया कि बच्चों को सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक करना बेहद आवश्यक है.

केंद्र सरकार ने सुरक्षा ऑडिट के लिए शिक्षा विभाग को लिखा पत्र

सूबे के 93 हजार स्कूलों की सुरक्षा ऑडिट होगी

स्वाति आनंद

पटना। राजस्थान के झालावाड़ में स्कूल की छत गिरने से बच्चों की हुई मौत की घटना के बाद शिक्षा मंत्रालय एक्शन मोड में है। मंत्रालय ने शिक्षा विभाग को भी एक्शन मोड में आने और राज्य के सभी स्कूलों की बिना देरी किए सुरक्षा ऑडिट कराने के निर्देश दिए हैं।

बिहार में सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी स्कूलों को मिलाकर 93 हजार स्कूलों की सुरक्षा ऑडिट कराई जाएगी। इसके तहत सभी स्कूलों में आधारभूत संरचनाओं और सुरक्षा के सभी पहलुओं पर सघन जांच की जाएगी। इसमें जर्जर भवन, खुले तार, आपातकालीन निकासी आदि की जांच होगी। केंद्र ने राज्य के शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव को इस बाबत पत्र लिखा है। इसमें कहा कि गाइडलाइन के आधार पर स्कूलों की ऑडिट कराई जानी है। निर्देश के मुताबिक जल्द इसकी कार्रवाई शुरू की जाए।

जहां जर्जर भवन वहां किसी सूरत में कक्षाएं नहीं चलाने का निर्देश : निर्देश के अनुसार जहां भी जर्जर अवस्था वाले भवन में कक्षाएं चल रहीं उन्हें तुरंत बंद करने को कहा गया है। उस विद्यालय की पहचान कर उसकी मरम्मत कराने का निर्देश दिया गया है। मरम्मत या निर्माण अवधि में विद्यालय संचालन के लिए वैकल्पिक व्यवस्था करनी होगी। मरम्मत कार्य की निगरानी डीईओ और स्थानीय अथॉरिटी करेगी और शिक्षा विभाग को इसकी रिपोर्ट देगी।

सेफ्टी सर्टिफिकेट मिलने के बाद ही दोबारा चलेंगी कक्षाएं : केन्द्र ने कहा कि जर्जर भवन की मरम्मत के बाद स्कूल में दोबारा कक्षाएं तभी चलेंगी जब अभियांत्रिकी एजेंसियों से अनिवार्य सुरक्षा एवं संरचनात्मक फिटनेस प्रमाणपत्र संबंधित स्कूल को प्राप्त हो जाएगा।

400 से अधिक विद्यालय भवन पटना जिले में जर्जर हैं

- स्कूलों में आधारभूत संरचनाओं की जांच-पड़ताल की जाएगी
- जहां जर्जर भवन वहां किसी सूरत में कक्षाएं नहीं चलाने का निर्देश

क्या है सुरक्षा ऑडिट

सुरक्षा ऑडिट स्कूलों की संरचना, बिजली, अग्निशमन, पेयजल और सीढ़ियों आदि की सुरक्षा मानकों के आधार पर गहन जांच करने की एक व्यवस्थित प्रक्रिया है। इसका उद्देश्य किसी बड़ी घटनाओं को होने से रोकना, छात्रों के जीवन की रक्षा करना और स्कूलों को पूर्णतः सुरक्षित वातावरण प्रदान करना है।

ऑडिट में यह जांच होगी

- **भौतिक अवसंरचना की सुरक्षा :** स्कूल भवन, दीवारों, गेट, छतों, बालकनियों, सीढ़ियों और रेलिंग
- **अग्नि सुरक्षा उपाय :** अग्निशामक उपकरणों की उपलब्धता व उनकी वैधता की जांच
- **बिजली व्यवस्था :** स्कूल में बिजली के तारों, स्विचबोर्ड, मीटर आदि
- **आपातकालीन निकासी :** आग, भूकंप, बाढ़ या किसी अन्य आपात स्थिति के लिए आपात निकासी
- **प्राथमिक चिकित्सा सुविधा :** प्राथमिक उपचार (फर्स्ट-एड) बॉक्स की उपलब्धता और उसमें जरूरी सामग्री

क्लास एक के बच्चों ने बनाई,टी एल एम कीट से रंग -बिरंगी आकृतियां। स्कूल -म०वि० रहमत नगर सदर मुख्यालय पूर्णियाँ।

पं. राजकुमार शुक्ल पर विशेष ....

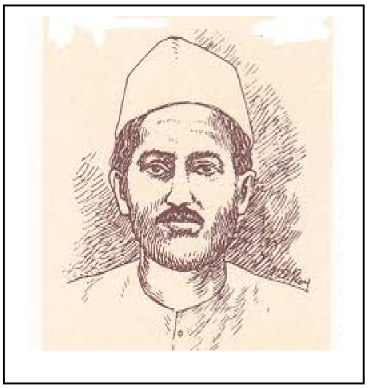

राजकुमार शुक्ला की कहानी : एक साधारण किसान, बड़ा बदलाव

बहुत समय पहले की बात है। बिहार के चंपारण ज़िले में एक छोटे-से गाँव सतवरिया में एक साधारण किसान रहते थे—पंडित राजकुमार शुक्ला। वे पढ़े-लिखे ज़्यादा नहीं थे, लेकिन बहुत बुद्धिमान और हिम्मती थे। उन दिनों अंग्रेज़ भारत पर राज कर रहे थे। उन्होंने किसानों पर एक कठोर नियम लगाया था, जिसे टिनकाठिया प्रथा कहा जाता था। इस नियम के अनुसार किसानों को अपनी ज़मीन का कुछ हिस्सा अंग्रेज़ों के लिए ज़बरदस्ती नील (इंडिगो) की खेती में देना पड़ता था। नील की खेती से किसानों को न तो लाभ होता था, न ही उन्हें अनाज उगाने के लिए ज़मीन बचती थी। नतीजा यह हुआ कि किसान गरीब और परेशान हो गए।

राजकुमार शुक्ला भी एक किसान थे। उन्होंने अपनी आँखों से किसानों का दुःख देखा और तय किया कि वे इस अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाएँगे। लेकिन अकेले उनकी बात अंग्रेज़ सरकार तक नहीं पहुँच रही थी। तभी उनके मन में एक विचार आया—गांधीजी को बुलाना होगा! साल 1916 में कांग्रेस का अधिवेशन लखनऊ में हो रहा था। शुक्ला जी भी वहाँ पहुँचे। उन्होंने गांधीजी को किसानों की समस्या बताई और उनसे चंपारण आने की गुज़ारिश की। गांधीजी उस समय बहुत व्यस्त थे और तुरंत आने का वादा नहीं कर पाए। पर राजकुमार शुक्ला पीछे हटने वाले नहीं थे। वे गांधीजी का जहाँ-जहाँ कार्यक्रम होता, वहीं पहुँच जाते और बार-बार कहते—

"चंपारण आइए, हमारे किसान बहुत दुःख में हैं।"

आख़िरकार गांधीजी राजकुमार शुक्ला की सच्चाई और जिद से प्रभावित हुए और चंपारण आने के लिए तैयार हो गए। साल 1917 में गांधीजी चंपारण पहुँचे। उन्होंने किसानों की दशा देखी, उनकी बातें सुनीं और अंग्रेज़ सरकार को सच्चाई दिखा दी। बड़ी मुश्किल के बाद सरकार को मानना पड़ा और किसानों को टिनकाठिया प्रथा से आज़ादी मिली। यही आंदोलन आगे चलकर चंपारण सत्याग्रह के नाम से मशहूर हुआ और भारत की आज़ादी की लड़ाई में एक नया अध्याय बन गया।

राजकुमार शुक्ला भले ही ज़्यादा पढ़े-लिखे नहीं थे, पर उनका साहस और दृढ़ता इतनी बड़ी थी कि उन्होंने गांधीजी को भी प्रभावित कर दिया। 20 मई 1929 को उनका निधन हो गया, लेकिन उनकी कहानी हमें आज भी यह सिखाती है कि—सच्ची हिम्मत और मेहनत से एक साधारण इंसान भी इतिहास बदल सकता है। एक बड़े रैयत होने के बावजूद अंग्रेजी हुकूमत के सामने घुटने टेकने के बजाय राष्ट्र एवं स्वाभिमान की खातिर ब्रितानी हुकूमत से लोहा लेने का संकल्प लिए और उन्होंने संघर्ष का रास्ता चुना। विश्व के सबसे बड़े किसान आंदोलन जिसमें चंपारण समेत बिहार और बंगाल के 19 लाख किसान सीधे तौर पर आंदोलन से जुड़े थे जिससे महात्मा गांधी के नेतृत्व में पहली बार बितानी हुकूमत को शिकस्त मिली और एग्रीगेरियन एक्ट 1919 के तहत सदा के लिए जबरन नील की खेती पर प्रतिबंध लगा और ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा नीलहे किसानों पर अत्याचार का पटाक्षेप हो गया। 300 बीघा जमीन के रैयत होने के बावजूद स्वाधीनता संग्राम की लड़ाई में अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले जिसके पास

मृत्युपरांत अंत्येष्टि के लिये भी उनके पास जमीन नहीं बची। ऐसे त्याग देशभक्ति और समर्पण के प्रतिमूर्ति पंडित राजकुमार शुक्ल को कृतज्ञ राष्ट्र ने बिल्कुल भूला दिया।

चंपारण सत्याग्रह के सूत्रधार पंडित राजकुमार शुक्ल जी की 150 वीं जयंती समारोह 23 अगस्त, 2025 को पंडित राजकुमार शुक्ल स्मृति संस्थान द्वारा पटना स्थित विद्यापति भवन में आयोजित की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के अध्यक्ष डॉ राजेश भट्ट ने की, जबकि मंच संचालन आलोक शर्मा ने किया। कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन माननीय सांसद पटना साहिब श्री रविशंकर प्रसाद एवं विधान पार्षद डॉ संजय पासवान और चर्चित इतिहासकार श्री भैरव लाल दास ने दीप प्रज्वलित कर संयुक्त रूप से की।

Nargis Khatoon,
उत्क्रमित मध्य विद्यालय
भैसदीरा,बरारी (कटिहार)

मेंहदी
प्रतियोगिता

उ. मध्य विद्यालय भैसदीरा,बरारी (कटिहार)

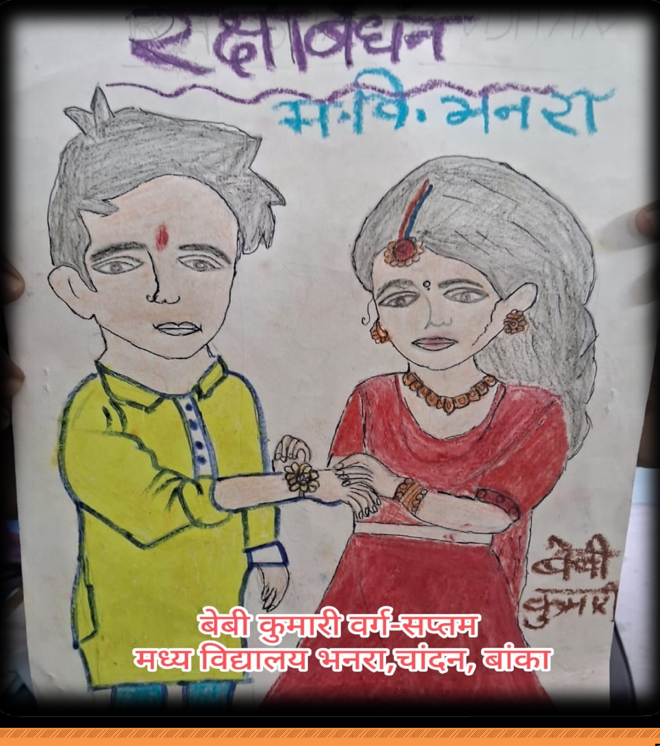

बेबी कुमारी वर्ग-सप्तम
मध्य विद्यालय भनरा,चांदन, बांका

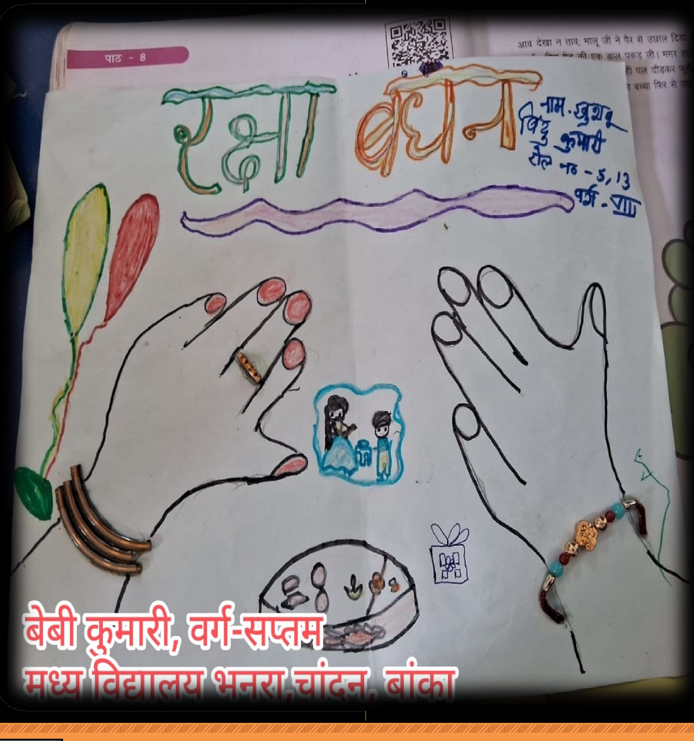

बेबी कुमारी, वर्ग-सप्तम
मध्य विद्यालय भनरा,चांदन, बांका

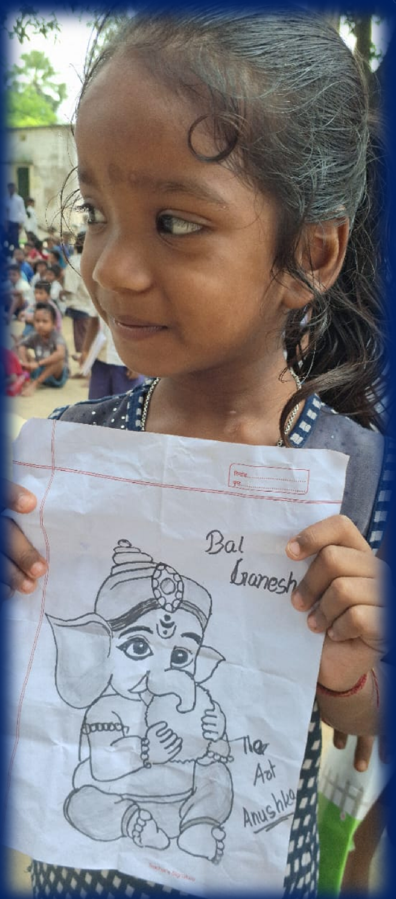

सभी आर्ट एवं क्राफ्ट उ.म.वि. भैसाडीरा, बरारी (कटिहार) के बच्चे कोमल कुमारी, प्रिया कुमारी, अनुष्का कुमारी, ऋषिका कुमारी आदि के हैं |

ना थी कोई दौड़, ना मंजिल की तलाश, बस दोस्तों संग हँसी- खेल की बात |
आज सब कुछ है, मगर दिल रोता है, क्यों छूट गया बचपन का वो साथ ||

बेबी कुमारी, काजल कुमारी, हेमन्त कुमारी,
साक्षी कुमारी, वर्ग-सप्तम
M.S Bhanra, Chandan, Banka

उभरते सितारे

जिनको भी प्रशस्ति-पत्र मिल रहा है उनका लिस्ट इस लिंक पर उपलब्ध है:-
https://www.teachersofbihar.org/award

Date: 01 Aug,2025

Cert. No.: 6cee23c6-1b66-49d1-88df-3157a1c99a4c

TEACHERS OF BIHAR — THE CHANGE MAKERS

बालमंच — नन्हीं कलम से ....

ToB उभरते सितारे

प्रशस्ति पत्र

RadheShyam

UMS TELGHI, Bhagalpur,

को टीचर्स ऑफ बिहार के 'बालमंच- नन्हीं कलम से' ऑनलाइन ई-मैग्जीन में उनके सहयोग, समर्पण एवं PAINTING,.............' के लिए 'ToB उभरते सितारे' के रूप में चयनित किया जाता है।

भविष्य के लिए असीम शुभकामनायें।

रूबी कुमारी — प्रधान संपादिका,बालमंच

त्रिपुरारि राय — संपादक एवं क्रिएटिव डिजाइनर, बालमंच

शिव कुमार — संस्थापक

www.teachersofbihar.org

THANK YOU